निर्गुण निराकार निर्विशेष ब्रम्हानंद का अनुभव करने वाले परमहंस भी श्रीकृष्ण की सुंदरता के कारण उनकी ओर आकर्षित होते है। जैसे परमहंस राजा जनक श्रीराम की ओर खींच गये।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

एक परमहंस कहता है, "सब लोग सावध हो जाओ। उस गली से कोई ना गुजरना। वहा एक नीले रंग का नंगा बालक (श्रीकृष्ण) खडा है। वो बडा ही जादुई है। उसको जब मैने देखा तो उसने मेरा ब्रम्हानंद छीन कर मेरे मन को लूट लिया। मेरे जैसे परमहंस का ये हाल होता है तो तुम जैसे संसारानंदियों का क्या हाल होगा?" वैसे तो सिद्धांत के अनुसार जिनको संसार अच्छा लगता है उनका मन मायिक होने के कारण श्रीकृष्ण का अलौकिक रूप नही देख सकता लेकिन तुलना की दृष्टी से उपर वाली बात कही गयी है।

परमहंस लोग वृंदावन धाम में लता, पता, वृक्ष इत्यादि बनने में अपना भूरी भाग्य मानते है जिससे कि श्रीकृष्ण के दर्शनादि का सौभाग्य प्राप्त हो।

श्रीकृष्ण का दिव्य चिन्मय रूप इतना अनुपम है कि एक बार उस रूप को देख लेने पर उन पर कोई भी अपना तन, मन, धन एवं प्राण न्यौछावर कर देता है। उस रूप को अनंत काल तक देखने पर भी तृप्ती नही होती। यही हाल लक्ष्मी का हुआ था। एक बार और, एक बार और करते करते लक्ष्मी श्रीकृष्ण को देखती ही रह गयी।

संसार में ऐसा नही होता। चाहे कोई विश्वसुंदरी क्यूं न हो, उसे लगातार देखकर किसी भी व्यक्ति को एक दिन भी एक से सुख की अनुभूती नही हो सकती। थोडी देर बाद

मन भर जाता है और वह व्यक्ति किसी और काम - खाने, पीने आदि में लग जाता है।

श्रीकृष्ण के रूप में एक विषेश बात और भी है। उनको जितनी बार देखो वे और अधिक अधिक सुंदर दिखाई देते है। पहली बार देखा तो श्रीकृष्ण बहुत सुंदर लगे, दुसरी बार देखा तो और सुंदर लगे। इस प्रकार श्रीकृष्ण का सौंदर्य नित नवायमान हेता है और निरंतर बढता जाता है। इतना ही नही, श्रीकृष्ण के शरीर के जिस अंग को देखो वो सबसे सरस लगता है। जैसे उनके बालों को देखा तो बाल अति आकर्षक लगे लेकिन जब उनके नयनों को देखा तो वे बालोंसे सरस प्रतीत हुए। श्रीकृष्ण के शरीर का हरएक अंग अन्य सब अंगों से सरस लगता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

श्रीकृष्ण का रूप सब प्रकार से अलौकिक है। जो उसे देखता है वही उसका रस जान सकता है।